ROLL NO. | DATE

* भाषा परिवार या संसार के भाषा परिवार :—

भाषा परिवार :— ऐसी भाषाओं का समूह जिनका जन्म किसी एक मूल भाषा से हुआ हो, भाषा परिवार कहलाती है।

संसार में कुल लगभग 3000 भाषाएँ बोली जाती है। इनमें बहुत सी भाषाएँ पारिवारीक रूप में आपस में संबंध है अर्थात वे मुलतह किसी एक भाषा से ही निकली है इनमें ध्वनी व्यकरण तथा शब्द समुह का तुलनात्मक अध्यायन विश्लेषण करके भौगोलिक निकटता का विचार करके विद्वानों ने भाषायों के पारिवारीक संबंधों का पता लगाया।

* भारत में पाए जानेवाले भाषा परिवार मुख्यत: 04 है :—

1) भारोपीय भाषा परिवार

2) द्रविड़ भाषा परिवार

3)

I) भारोपीय परिवार :— भारत से लेकर प्रायः पूरे यूरोप तक बोले जाने के कारण इस परिवार को 'भारोपीय परिवार' कहते है। यह विश्व एवं भारत का सबसे बड़ा भाषा परिवार है। और सबसे महत्वपूर्ण भी है क्योंकि रूसी अंग्रेजी, प्राचीन फारसी, हिंदी, तमाम भाषाएँ इसी समूह से संबंध रखती है। इसे 'भारोपीय भाषा परिवार' भी कहते है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

* इसे हिंदी आर्य भाषा परिवार भी कहते है,
* इसका विभाजन इन्डो-यूरोपियन (हिन्द यूरोपीय) भाषा परिवार से हुआ है।
* यह सबसे बड़ा भाषा परिवार है।
* इसके अंतर्गत हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, स्पेनिश, जर्मन, रुसो, पालि, प्राकृत अपभ्रंस, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, नेपाली, बांग्ला आदि।
* इसकी दूसरी शाखा इन्डो-इरानी भाषा परिवार है जिसके अंतर्गत फारसी, ईरानी, पश्तो, बलूची आदि भाषाएँ आती है।

2) द्रविड़ भाषा परिवार :—>

यह भारत का दूसरा बड़ा परिवार

* इस भाषा परिवार की भाषाएँ अधिकतर दक्षिण भारत में बोली जाती है, इसके अंतर्गत –

1) तमिल - तमिलनाडू
2) कन्नड - कर्नाटक
3) मलयालम - केरल
4) तेलुगू - आंध्र प्रदेश

* इस परिवार का सबसे बड़ा सदस्य तमिल भाषा है।
* दक्षिणी भारत और श्रीलंका में द्रविड़ी समूह की लगभग 26 भाषाएँ बोली जाती है, अन्त - अश्लिष्ट - योगात्मक भाषाएँ है
* द्रविड भाषा परिवार के भी सबसे अधिक वक्ता भारत में ही है।

* चीनी परिवार :—>

इस परिवार का मुख्य क्षेत्र चीन, स्याम, तिब्बत, ब्रम्हा, तथा भारत में उत्तरी सीमा के आसपास है।

* इसकी मुख्य भाषाएँ चीनी, स्यामी, बरमी तथा तिब्बती तथा भारत में मणिपुरी, गारो, बोडे, नागा, नेवारी आदि है।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

5) सेमेटिक परिवार :-

यह परिवार अरब, मिस्र, मोरक्को तथा इनके आस-पास के प्रदेशों में उत्तरी अफ्रीका तथा पास के एशियाई भागों में फैला हुआ है। हिब्रू, अरबी आदि इसकी मुख्य भाषाएँ है। मूल बाइबिल इसी परिवार की प्राचीन हिब्रु भाषा में लिखी गई थी। कुछ लोग सेमेटिक तथा हेमिटिक को एक ही परिवार की दो शाखाएँ मानते है।

6) हेमेटिक परिवार :-

इसका क्षेत्र उत्तरी आफ्रीका है। इसकी मुख्य भाषाएँ प्राचीन मिस्री, सोमाली, कप्टिक, नामा, फुला आदि है। यह परिवार कई बातों में हेमेटिक परिवार से मिलता-जुलता है

7) आग्नेय परिवार :-

यह परिवार प्रशान्त महासागर एवं हिंद महासागर के द्वीपों तथा भारत के कुछ भागों में फैला हुआ है। इसकी प्रमुख भाषाएँ मुण्डा, मलय तथा नीकोबरी है।

8) यूराल अल्टाइक :-

इसे कुछ विद्वान एक परिवार और कुछ यूराल और एल्टाइक परिवारों का एक समुदाय मानते है। इसकी भाषाएँ यूराल और अल्टाइक के बीच में तुर्की, फिनलैंड आदि में बोली जाती है।

9) बांटू परिवार :-

यह परिवार मध्य तथा दक्षिणी अफ्रीका एवं जंजीबार द्वीप में बोला जाता है। इसकी प्रमुख भाषाएँ काफिर स्वाहिली आदि है।

10) जापनी-कोरियाई परिवार :-

यह परिवार जापान, कोरिया तथा आसपास है। पहले ये दोनों अनिश्चित परिवार की मानी जाती थीं।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

11) अमरीकी या रेड इण्डियन परिवार :-

यह परिवार उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका में फैला है। आदिवासियों का परिवार है। अथवस्कर, करीब, एस्कमों, मय आदि इसकी मुख्य भाषाएँ है। अधिकांश लोग इन्हे कई परिवारों का समूह मानते हैं।

12) काकेशस परिवार :-

इसका क्षेत्र कृष्णा सागर और कैस्पियन सागर के बीच काकेशस का पहाड़ी इलाका है। पहाड़ी प्रदेश होने के कारण इसकी अनेक भाषाएँ विकसित हो गई है। मुख्य भाषा जार्जियन है।

13) सूडानी परिवार :-

आफ्रीका में भूमध्य रेखा के उत्तर लगभग सवा चार सौ भाषाओं के इस परिवार को कुछ लोग एक परिवार और कुछ परिवारों का एक वर्ग मानते हैं। ईव, होसा, मादवा आदि इसकी प्रमुख भाषाएँ हैं।

इस तरह हिंदी संसार के भाषा समूह में भारोपीय परिवार की सतम् शाखा की भारत - ईरानी उपशाखा की भारतीय शाखा की एक आधुनिक भाषा है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

* हिंदी क्षेत्र और बोलियाँ :→

* भूमिका :—

हिंदी भाषा के क्षेत्रीय प्रसार को 'हिन्दी भाषी क्षेत्र' कहा गया है। इसमें दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उतराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान इत्यादि प्रदेश आते हैं। इन प्रदेश में बोली जाने वाली बोलियों को मिलाकर हिंदी भाषी प्रदेश बनता है। यहाँ हम हिन्दी की उपभाषा एवं बोलियों का परिचय मिलता है।

1) हिंदी क्षेत्र
2) अन्यभाषा क्षेत्र
3) भारतेतर क्षेत्र

I) हिंदी क्षेत्र :→ राजस्थानी, हरीयाणा, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हिमालय प्रदेश, उतर प्रदेश तथा बीहार।

* पंजाब के कुछ भाग → अबोहर तथा फाजिलका महाराष्ट्र।

II) अन्यभाषा क्षेत्र :→ केरला, कर्नाटका, आंध्र प्रदेश, मुंबई, कोलकत्ता, शिलौंग तथा अहमदाबाद तमीलनाडू।

III) भारतेतर क्षेत्र :→ सूरिनाम, मोरिशस, फिजी, इंग्लैंड, आदि में नेपाल के सिमावर्ती के इलाके में दिखते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

* हिंदी की प्रमुख क्षेत्र और बोलियाँ :-

हिंदी भाषा के उपभाषाओं एवं बोलियों का अपने अध्ययन कर लिया है। 5 उपभाषाओं एवं 17 बोलियों में विभक्त हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि भाषा रही है।

I) पश्चिमी हिंदी
1) खड़ी बोली
2) ब्रज भाषा
3) हरियाणवी
4) कन्नौजी
5) बुन्देली

II) पूर्व राजस्थानी
1) मेवाती
2) मालवी
3) जयपुरी
4) मेवाड़ी

III) पूर्वी हिंदी
1) अवधी
2) बघेली
3) छत्तीसगढ़ी

IV) पहाड़ी
1) मैथिली
2) कुमाऊँनी
3) गढ़वाल
4) नेपाली

V) बिहारी
1) भोजपुरी
2) मगही

I) पश्चिमी हिंदी :-
1) खड़ी बोली :- खड़ी बोली का क्षेत्र मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फर, सहारनपुर, मुरादाबाद, रामपुर आदि जिले है। साहित्य की दृष्टि से खड़ी बोली का साहित्य सर्वाधिक समृद्ध है।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

2) बघेली :→ बघेलखण्ड की बोली को बघेली कहा गया है। बघेली में रीवाँ, जबलपुर, मांडला, बालाघाट आदि जिले आते हैं। बघेली में लोक साहित्य मिलता है।

3) छत्तीसगढ़ी :→ छत्तीसगढ़ की बोली को छत्तीसगढ़ी कहा गया है। मध्यप्रदेश के रायपुर, बिलासपुर ये केन्द्र है।

III) राजस्थानी :—

1) जयपुरी :→ इस बोली को ढूँढाली भी कहते हैं, हाड़ौती इसकी उपबोली है। जयपुरी बोली के क्षेत्र कोटा, बूँदी के जिले एवं जयपुर है।

2) मेवाती :→ यह राजस्थानी के उत्तर सीमा के अंतर्गत बोली जाती है। इसकी प्रमुख उपबोली अहीरवाटी है। मेवाती, भरतपुर औ गुड़गाँव के जिलों में बोली जाती है।

3) मालवी :→ दक्षिणी राजस्थान की बोली को मालवी कहा जाता है। क्षेत्र बूँदी, झालावाड जिले तथा उत्तरी मध्यप्रदेश के मंदसौर, इंदौर, रतलाम आदि जिले आते है।

4) मारवाड़ी :→ इसका केन्द्र मारवाड है। जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर आदि जिले है। हिंदी साहित्य की वीरगाथाएँ मारवाड़ी में ही लिखी गयी थीं। मीरा का काव्य मारवाड़ी में ही रचित है।

IV) बिहारी :→

1) भोजपुरी :→ बिहार का भोजपुर जिला इस बोली का केन्द्र है। इस बोली के प्रमुख क्षेत्रों में बलिया, बस्ती, जौनपुर, वाराणसी, सोनभद्र, चंपारन, सहारन, भोजपुर आदि आते है। इसमें पर्याप्त लोक साहित्य मिलता है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

2) ब्रज :—> ब्रज का क्षेत्र मथुरा, वृंदावन के आस-पास का क्षेत्र, आगरा, मथुरा, एटा, मैनपूरी, फर्रुखाबाद, बुलंदशहर, बदायूँ आदि जिलों में ब्रजभाषा बोली जाती है। सूर, अष्टछाप, का साहित्य, बिहारी, देव, घनानंद समेत पूरा रीतिकाल, जगन्नाथदास रत्नाकर, हरिऔध जैसे कवियों के साहित्य में ब्रज भाषा समृद्ध है। व्याकरणिक दृष्टि से ओ/औ करांत इसकी विशेषता है। गयो, भलो, कह्यो इत्यादि शब्द इसके उदाहरण।

3) कन्नौजी :—> कन्नौजी का क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इटावा, शाहजहाँपुर, फर्रुखाबाद आदि जिले है। कानपूर, हरदोई के हिस्से भी कन्नौजी के क्षेत्र है। यह ब्रजभाषा और बुन्देली के बीच का क्षेत्र है। खोटा, छोटे, मेरा, भयो, बड़ो इत्यादि 'ओ' कारान्त भाषा के रूप में कन्नौजी को देखा जा सकता है।

4) बुन्देली :—> बुन्देलखण्ड जनपद की बोली को बुन्देली कहा गया है। इस बोली का क्षेत्र झाँसी, जालौन, सागर, होशंगाबाद, भोपाल इत्यादि है।

5) हरियाणवी :—> यह बोली दिल्ली के कुछ हिस्सो में, करनाल, रोहतक अंबाला आदि जिल्लो में बोली के जाती है। को के लिए ने का प्रयोग हरियाणवी की विशेषता है।

II) पूर्वी हिंदी :—

i) अवधी :—> अवध मण्डल की बोली को अवधी कहा गया है। इस भाषा का प्रमुख क्षेत्र लखनऊ, उन्नाव, फैजाबाद, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, फतेहपूर आदि जिले आते हैं रामभक्ति शाखा का केन्द्र अवध मण्डल ही रहा है। इस भाषा में तुलसीदास प्रमुख कवि हैं।

Scanned with OKEN Scanner

कबीर जैसे बड़े कवि के ऊपर भी भोजपुरी का प्रभाव है। आज भोजपुरी फिल्मों ने इस बोली को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि दी है। भोजपुरी विदेशों में - मारीशस, सूरीनाम में भी प्रचलित व लोकप्रिय है।

2) मगही :→ मगध प्रदेश की भाषा होने के कारण इसका नाम मागधी पड़ा है। यह बोली मुख्य रूप से बिहार के पटना, गया आदि जिलों में बोली जाती है।

3) मैथिली :→ यह बोली प्रमुख रूप से उत्तरी बिहार एवं पूर्वी बिहार के चंपारन, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया आदि जिलों में बोली जाती है। साहित्य दृष्टि से मैथिली, बिहारी उपभाषा की बोलियों में सर्वाधिक संपन्न है। आधुनिक कवियों में नागार्जुन जैसे समर्थ कवि मैथिल भाषा की मिट्टी से ही उपजे हैं।

V) पहाड़ी :→

1) कुमाऊँनी :→ क्षेत्र उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, चम्पावत आदि जिलों में बोली जाती है। इस बोली में समृद्ध साहित्य मिलता है, सुमित्रानंदन पंत, शेखर जोशी, मनोहरश्याम जोशी, इलाचन्द्र जोशी जैसे बड़े साहित्यकार दिये हैं।

2) गढ़वाली :→ क्षेत्र टेहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल दक्षिणी, नैनीताल तराई, सहारनपुर, बिजनौर जिलों में बोली जाती है। इस बोली में समृद्ध लोक साहित्य मिलता है। गढ़वाली की उपभाषाओं में राठी, श्रीनगरिया आदि हैं। गढ़वाल मंडल ने हिन्दी साहित्य को पीताम्बर दत्त बर्थवाल, वीरेन डंगवाल और मंगलेश डबराल जैसे ख्यातिनाम साहित्यकार दिये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

* शब्द समूह और उसकी विशेषताएँ हिंदी के स्वनीम देवनागरी लिपि और हिंदी की वर्तनियाँ :→

शब्दों के समूह को शब्द समूह कहते है। कई शब्द ऐसे है, जिन्हें समझने के लिए शब्द समूह की अवश्यकता होती है।

जैसे → वक्ता → भाषण देने वाला।

उभयचर जल थल

शब्दों के लिए प्रचलित शब्द समूह लिखो।

1) विद्यालय :→ वह स्थान जहाँ विद्या पढाई जाती है।

2) शिक्षिका :→ पढ़ाने का काम करनेवाली स्त्री

3) लेखक :→ लेख या पुस्तक आदि लिखने वाला।

4) दाता :→ जो दान देता है।

5) सहभागी :→ समानता के भाव से किसी काम में शामिल होनेवाला

6) गायक :→ जो गाता है वह

7) अनुवादक :→ एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद का कार्य करनेवाला।

8) नेता :→ जो नेतृत्व का कार्य करता है।

समूह :→ एक जगह उपस्थित एक ही प्रकार के अनेक चीजें से है।

जैसे :→ मैदान में खेल रहे बच्चे एक समूह बनाते है।

* परिभाषा :→

(1) मेकाइवर तथा पेज :→ जो एक दूसरे के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते है।

(2) स्मिथ :→ दो ऐसे व्यक्तियों से है जो अपने अथवा दूसरो के लिए सामाजिक रूप से अर्थपूर्ण होते है।

Signature

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

* शब्द समूह की विशेषताएं :—>

(1) व्यक्तियों का समूह :—> एक व्यक्ति से समूह नहीं बनता, इसके लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना जरूरी है।

(2) कार्य विभाजन :—> सामान्य उद्देश्य वाले व्यक्ति किसी समूह का निर्माण करते है।

(3) सामान्य उद्देश्य :—> किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही समूह का निर्माण किया जाता है।

(4) स्तरीकरण :—> समूह के सभी सदस्यों की स्थिति एक समान नहीं होती है। सभी सदस्य अलग-अलग स्थिति और भूमिका का निर्वाह करते है।

हिंदी के देवनागरी लिपि और हिंदी की वर्तनियाँ

* देवनागरी लिपि :—>

भाषा के उच्चरित रूप की निर्धारित प्रतीक चिन्हों के माध्यम से लिखित रूप देने का माध्यम ही लिपी है। अर्थात किसी भी भाषा को लिखने का ढंग लिपी कहलाता है।

विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। इन में अधिकार भाषाओं की अपनी लिपी है। भारत में भी अनेक लिपीयाँ प्रचलित है। भारत में भी अने यहाँ बंगला, तमिल, तेलगु, मलयालम, गुजराती, आदि भाषाओं की अपनी-अपनी लिपियाँ है हिंदी भाषा देवनागरी लिपी में लिखी जाती है इस समय देव-नागरी लिपी में हिंदी के अतिरिक्त मराठी, कोंकणी, नेपाली, डोगरी आदि कई भाषाएँ लिखी जा रही है।

Scanned with OKEN Scanner

* देवनागरी लिपि के गुण :—>

1) इस लिपि में वर्णों का नाम उच्चारण के अनुसार होता है एवं लेखन मुद्रण में एकरूपता है।

2) देवनागरी लिपि बाएँ से दाए की तरफ लिखी जाती है।

3) यह विधि वैज्ञानिक विधि है। इस विधि में प्रत्येक वर्ण निश्चित ध्वनि का संकेत करता है।

4) इस लिपि में हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली एवं गुजराती भाषा के भी शब्द लिए जाते है।

* देवनागरी लिपि के दोष :—>

1) इसमें एक ही शब्द को कई तरह से लिया जा सकता है। जैसे - गर्मी - गरमी।

2) इसमें वर्णों को पढ़ने में कभी-कभी भ्रम भी होता है। जैसे - ख

3) इस लिपि के मुद्रण में कठिनाई होती है।

* देवनागरी लिपी के सुधार का प्रयास :—>

① इसके सुधार का पहला प्रयास तिलक ने अपने पत्र 'केसरी' में कि

परिभाषा :—

देवनागरी एक भारतीय लिपी है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कई विदेशी भाषाएँ लिखी जाति है। इसकी पहचान एक क्षितिज रेखा है, जिसे 'शिरोरेखा' कहते है, यह बायें से दाये लिखी जाती है।

उद्भव और विकास :—

1. मूल रूप से देवनागरी का आदिस्त्रोत 'ब्राह्मी लिपी' है 350 ई तक इसका सामान्य रूप बनता रहा।

2. देवनागरी का संबंध उतरी उतर भारत की इस लिपी में गुप्तकाल यानि चौथी सदी से विशेष परिवर्तन आया और छठी सदी तक चलता रहा।

3. उतरी शाखा में गुप्तलिपी के अंतर 'कुटिल लिपी' आती है। मंदसोर मधुबन, जोधपुर, आदि के 'कुटिल लिपी' कौलीन अंतर देवनागरी से काफी मिलते जुलते है।

4. देवनागरी के आधररूपों का निरंतर चोड़ा रूपांतरण होता गया, जिसकी फलस्वरूप आज का रूप सामने आया।

5. आधुनिक देवनागरी लिपी का विकास 12वीं शताब्दी के निकट प्राचीन नागरी से हुआ।

* देवनागरी लिपी के गुण :—

1. भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिपी के आधार पर देवनागरी लिपी की दो भाषाओं 'रोमन' तय 'पर्सियन' की तुलना में देखा जाए तो देवनागरी अधिक वैज्ञानिक लिपी है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

(2) स्वर और व्यंजनों के लिए अलग-अलग चिन्हों का प्रवधान किया गया है।

(3) स्वरो में ह्रस्व और दीर्घ स्वर के लिए अलग-अलग स्पष्ट चिन्ह निर्धारित किए-गिए है।
जैसे :- अ, आ, इ, ई।

(4) इसके स्वर तथा व्यंजन वैज्ञानिक रीति से क्रमबद्ध है।

(5) व्यंजन में उच्चारण स्थान की दृष्टि से तथा प्रयत्न की दृष्टि से अलग-अलग चिन्हों का क्रमिक विधान किया जाता है।
जैसे :- घोष, अल्पप्राण, महाप्राण आदि।

(6) व्यंजन में पाँचवा वर्ण अनुनासिक है।
जैसे :- ङ, ञ, ण, न, म -> अनुनासिक है।

(7) प्रत्येक ध्वनि के लिए एक ही चिन्ह निर्धारित या निश्चित है।
जैसे :- 'क' का मतलब 'क'।

(8) देवनागरी लिपि में प्रत्येक वर्ण का स्पष्ट उच्चारण होता है। जैसे :- टीक

(9) देवनागरी लिपि के लेखन और मुद्रण के अंतर एक रूप के है। (परंतु रोमन में -> (Capital, Small आदि है)

(10) देवनागरी लिपि की यह विशेषता है, कि वह सुपाठ्य है अर्थात लेखन और पठन में संकेत को लेकर संदेह नहीं है।

* देवनागरी लिपि के दोष :-

(1) देवनागरी लिपि अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण होने के कारण सर्वश्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक लिपी है परंतु इस लिपी में कुछ दोष भी दिखाई पड़ती है. इसलिए इसमें अवैज्ञानिक के भी दर्शन होते है।

(2) देवनागरी लिपि अक्षरात्मक या अर्द्धअक्षरात्मक लिपी है। इसलिए ध्वनियों का पूर्व विश्लेषण नहीं हो पाता है।
उदा :- (1) कमल -> क + अ + म + अ + ल + अ (कमल - (रोमन 06)
(2) कर्म -> क + अ + र + अ + म + अ कर्म - (रोमन 05) Karma

(3) 'शिरोरेखा' के कारण ऐसे कई वर्ण है, जिन्हें देखने से एकरूपता या समरूपता का आभास होता है।
जैसे -> म, भ:, घ, ध,

(4) एक ध्वनि के लिए कहीं-कहीं एक से अधिक चिन्हों का प्रयोग मिलता है।
जैसे -> (1) राम (र) (3) मृग (C) (5) ट्रक (n)
(2) कर्म (ʃ) (4) क्रम (/)

(5) देवनागरी लिपि में कुछ वर्ण ऐसे भी है जो लिखावट के समय भ्रम उत्पन करते है -> स तथा ख

(6) इस लिपि में संयुक्त व्यंजनों की लिखावट भ्रम उत्पन्न करती है
जैसे -> कर्म -> र का उच्चारण 'म' से उच्चारण 'म' से पहले, परंतु लिखावट 'म' के साथ।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

2) 1926 ई. में 190 'दाइपो का फान्ट' तैयार किया। जिसे तिलक फॉन्ट कहा जाता है,

3) सावरकर बन्धुओं ने 'अ' की 12 खड़ी बनाई।

4) डॉ. सुनिति कुमार चटर्जी ने देवनागरी के स्थान पर 'रोमन लिपि' का सुझाव दिया।

5) 1947ई. में राजभाषा आयोग का गठन हुआ। जिसके प्रथम अध्यक्ष BG खेर थे।

6) 1957 ई. में संसदीय राजभाषा समीति का गठन GB पन्त की अध्यक्षता में हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner